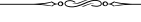

Atmopadesha



आत्मोपदेश



Document Information



Text title : Atmopadesha

File name : Atmopadesha.itx

Category : misc, vedanta, advice, advice

Location : doc_z_misc_general

Author : Durgaprasad DvivedI

Transliterated by : Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Proofread by : Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Latest update : April 18, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 25, 2021

sanskritdocuments.org



Atmopadesha

आत्मोपदेश



शास्त्रप्रतिष्ठा गुरुवाक्यनिष्ठा

सदात्मदृष्टिः परितोषपुष्टिः ।

यतस्र अेता निवसन्ति यत्र

स वर्तमानोऽपि न लिप्यतेऽद्यैः ॥ १ ॥

शास्त्रों का भली प्रकार ज्ञान हो और गुरु के वाक्य में
निष्ठा हो; सदा जगत् को आत्मा रूप से ही देखता हो और
अटल सन्तोष हो, ये चार बातें जिसमें मौजूद हो वह कर्म करता
प्रतीत होवे तो भी उसको पाप का स्पर्श नहीं होता ।

उद्देश्यभेदेन विधेयभेदे

शास्त्राण्यनेकानि भवन्ति तावत् ।

तत्रास्ति कैराद्रियमाणमेव

विभावनीयं परमार्थसिद्ध्यै ॥ २ ॥

भिन्न-२ उद्देश को लेकर भिन्न-२ उपदेश होता है और
इसी प्रकार से नाना शास्त्रों की उत्पत्ति हुई है, इसलिये आस्तिक
पुरुष को चाहिये कि अपने परमार्थ की सिद्धिकाल में उन
सबकी ओर आदर भाव रखे ।

व्याख्यावलेनाभिनिवेशभावा

प्रमेयभेदो बहुधाभ्युद्येति ।

तत्रास्ति मात्सर्यकलङ्कमुक्ता

मुक्तावदाता धिषणा प्रमाणम् ॥ ३ ॥

अनुराग से युक्त होकर विद्वत्ता के बल व्याख्या करने से ही
तत्त्व के ज्ञान में मत भेद उदय होता है । जैसे समय जिसकी
बुद्धि मत्सर के दूषण से रहित, समान और शुद्ध हो वही
प्रमाण है ।

तर्कोऽप्रतिष्ठो श्रुतयो विभिन्ना

नैको मुनिर्यस्य वयः प्रमाणम् ।

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुडायां

मडाजनो येन गतः स पन्थाः ॥ ४ ॥

तर्क से तो पदार्थ का ज्ञान ही नहीं होता, श्रुतियों का आपस में विरोध देखा जाता है, कोई अेक भी ऐसा मुनि है नहीं, जिसका वचन हम सर्वथा प्रमाण मान सकें और धर्म तत्त्व तो अत्यन्त गूढ है, ऐसी अवस्था में मडापुरुष जिस मार्ग से चलते हैं, उसी मार्ग से जाना यही ठीक है ।

अनेकशास्त्रार्थविमर्शनेन

तत्तन्मडाव्यक्तनिदर्शनेन ।

त्रैकालिकज्ञानविकरवरेषु

मडाजनत्वं गुरुषूपदिष्टम् ॥ ५ ॥

नाना शास्त्रों को अच्छी तरह से पढ लेने से तथा उनमें जिसको मडाव्यक्ति बताया है उससे (यह जान पड़ता है कि) तीनों काल का ज्ञान रखने वाले गुरुओं को ही मडाजन बतलाया गया है ।

यद्वेकतत्पुत्रकलत्रमित्र-

विद्वेष्युदासीनचराचरं हि ।

तन्नामरूपाभ्यविकारवर्जं

ब्रह्मेति वेदान्तविद्यो विदन्ति ॥ ६ ॥

जो (परब्रह्म) अेक है वही पुत्र, स्त्री, मित्र, शत्रु, उदासीन तथा सब चर और स्थिर जगत् रूप से भासता है वही नाम रूप के विकार से रहित ऐसा ब्रह्मा है, ऐसा वेदान्त के जानने वाले कहते हैं ।

तदात्मरत्नं न भङ्गश्रुतेन

न वा तपोराशिबलेन लभ्यम् ।

प्रकाशते तत्तु गुडुपदिष्ट-

ज्ञानेन जन्मान्तरभाण्डकेन ॥ ७ ॥

वह आत्मा रुपी रत्न, विद्वत्ता या पाण्डित्य प्राप्त करने से
नहीं लाभ होता और बहुत तप करके उसके बल से भी आत्म
ज्ञान नहीं होता; परन्तु श्रीगुरु के उपदेश से उत्पन्न हुआ ज्ञान
से वह आत्म तत्त्व प्रकट होता है जिससे फिर जन्म नहीं होता ।

जात्या गुणैर्न क्रियया य सम्यक्
गतप्रमादो विदधद्विधेयम् ।
लभेत यत्नेन सदैव तुष्यन्
यत्नेत भाग्यार्पित कार्यकायः ॥ ८ ॥

जन्म, गुण और कर्म के अनुसार, प्रमाद न करते हुए
विहित कर्म हीकर किया करे । जो कुछ प्राप्त हो उसी
में सदा सन्तुष्ट रहकर देह को प्रारब्ध के ठीपर छोड़कर
(आत्म प्राप्ति के लिये) यत्न किया करे ।

निष्काम चित्तेन किलैकतानः
परामुशन्वस्तु गुणुपदिष्टम् ।
उदारभावो रचयेत सौम्यं
परं परेषामपि किं स्वनिष्ठम् ॥ ९ ॥

निष्काम चित्त से अकारिता पूर्वक गुरु के उपदेश के अनुसार
उदार बुद्धि वाला पुरुष पर से भी पर जैसे आत्मा में रहे हुए
सुभ की भावना करे ।

एति आत्मोपदेश सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com



Atmopadesha

pdf was typeset on December 25, 2021



Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

